

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलॉजी, सत्र 1, जोहानिन थियोलॉजी अवलोकन

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं जो जॉनीन थियोलॉजी पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 1 है, जॉनीन थियोलॉजी अवलोकन।

जॉनीन थियोलॉजी पर हमारे पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है, जो कि धर्मशास्त्र है, विशेष रूप से जॉन के सुसमाचार का, उनके पत्रों का थोड़ा सा हिस्सा, और आइए प्रभु से प्रार्थना करें।

दयालु पिता, हमें अपना वचन देने के लिए आपका धन्यवाद। प्रिय शिष्य और उसके सुसमाचार और पत्रों और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिए आपका धन्यवाद। हमें प्रोत्साहित करें, हमें सिखाएँ, हमें सुधारें क्योंकि हम इन बातों के बारे में एक साथ सोचते हैं।

इस चौथे सुसमाचार की हमारी समझ को बढ़ाने के लिए, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं। आमीन। जॉन का धर्मशास्त्र, या विशेषण जोहानिन धर्मशास्त्र, इस पाठ्यक्रम का विषय है।

यह बाइबिल धर्मशास्त्र का एक उपसमूह है। शायद धर्मशास्त्रीय विश्वकोश की चर्चा उचित होगी। व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र बाइबल का अध्ययन है, विशेष रूप से मूल भाषाओं का उपयोग करके।

बाइबिल धर्मशास्त्र फिर व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र पर आधारित है, जो बाइबल की शिक्षाओं को पुराने नियम से नए नियम में ऐतिहासिक रूप से खोजता है। यह बाइबिल की कहानी का अनुसरण करता है। बाइबिल धर्मशास्त्र का एक उपसमूह, जिसे आप विभाजन भी कह सकते हैं, वह है बाइबिल के विभिन्न कॉर्पोरा का अध्ययन, जो कि कॉर्पस का बहुवचन है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, पॉल के धर्मशास्त्र, पॉलिन धर्मशास्त्र या ल्यूक-एक्ट्स की शिक्षा का अध्ययन ल्यूकन धर्मशास्त्र का अध्ययन होगा, क्योंकि यह एक लेखक और उसके लेखन पर केंद्रित है। यह व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र के बजाय बाइबिल धर्मशास्त्र है, जो इसे समझने के लिए पाठ से काम करता है, बाइबिल धर्मशास्त्र का व्यापक अर्थ सृष्टि, पतन, मोचन और पूर्णता से सिद्धांतों का पता लगाना है। फिर यह व्यवस्थित धर्मशास्त्र की ओर ले जाता है, बाइबिल की शिक्षाओं की एक अधिक व्यापक प्रस्तुति, जो एक सीधी रेखा में नहीं, बल्कि व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र, बाइबिल धर्मशास्त्र, व्यवस्थित धर्मशास्त्र को ध्यान में रखता है, लेकिन ऐतिहासिक धर्मशास्त्र, चर्च ने शास्त्रों और इसकी शिक्षाओं को कैसे समझा है, इसका अध्ययन, एक कोण पर आता है, यदि आप चाहें, तो ठीक इस बिंदु पर, जो व्यवस्थित धर्मशास्त्र की हमारी समझ में योगदान देता है।

उदाहरण के लिए, हम ऐतिहासिक धर्मशास्त्र पर विचार किए बिना प्रभु के भोज के व्यवस्थित धर्मशास्त्र को कैसे समझना शुरू कर सकते हैं? हम बाइबिल के डेटा, व्याख्या और पुराने नियम

की पृष्ठभूमि के साथ काम करेंगे, और फिर प्रभु के भोज के लिए; उदाहरण के लिए, हमारे पास मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में भोज की संस्था है। यह जॉन में नहीं है। भोज का उत्सव, यहां तक कि यह, प्रेरितों के काम 2 और प्रेरितों के काम 20 में रोटी तोड़ने में बहस की जाती है।

मुझे लगता है कि दूसरा विशेष रूप से प्रभु भोज है, और मुझे संदेह है कि पहला भी ऐसा ही है। फिर, 1 कुरिन्थियों 10 में पॉल की चर्चा, जिसे अक्सर अनदेखा किया जाता है, ठीक 16 और 17 के आसपास, और फिर, निश्चित रूप से, 1 कुरिन्थियों 11 में पॉल द्वारा भोज की संस्था की प्रस्तुति। यह सब महत्वपूर्ण है, व्याख्या, और फिर पुराने से नए नियम की ओर जाना, उदाहरण के लिए, फसह के साथ, क्योंकि फसह के समय, यीशु ने प्रभु के भोज की स्थापना की, भोज के आशीर्वाद के तीसरे प्याले को प्रभु के भोज के प्याले में बदल दिया, इस तरह की बात।

लेकिन हम प्रभु के भोज के व्यवस्थित धर्मशास्त्र को रोमन कैथोलिक, लूथरन, सुधारवादी और स्मारकवादी विचारों पर विचार किए बिना कैसे समझ सकते हैं? इसलिए, किसी भी मामले में, हम बाइबिल धर्मशास्त्र से निपट रहे हैं, सृष्टि, पतन, मुक्ति और पूर्णता के विचार के व्यापक बाइबिल विस्तार में नहीं, बल्कि अधिक स्थानीय अर्थ में, विशेष रूप से जॉन के सुसमाचार की शिक्षाओं और जॉन के पत्रों का थोड़ा सा अध्ययन करते हुए। इसकी शैली के कारण, हम रहस्योद्घाटन की पुस्तक और इसकी शिक्षाओं को किसी अन्य समय, किसी अन्य पाठ्यक्रम और किसी अन्य प्रस्तुतकर्ता के लिए छोड़ देंगे। हमारे जोहानिन धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम का अवलोकन।

हम जॉन की शैली से शुरू करते हैं क्योंकि उनकी शैली पर विचार करना उनके विचारों का परिचय है। हम जॉन के सुसमाचार की संरचना को देखते हैं, जो मुझे त्रिपक्षीय लगता है; यानी, अध्याय 1, 1 से 18 में इसकी प्रस्तावना है, और अध्याय 21 में उपसंहार है। अध्याय 119 और अध्याय 20 के अंत के बीच जॉन के सुसमाचार का मुख्य भाग है, और यह दो बड़े भागों में विभाजित है, जैसा कि हम देखेंगे।

संकेतों की पुस्तक, अध्याय 2 से 12. महिमा की पुस्तक, अध्याय 13 से 20. प्रस्तावना, संकेतों की पुस्तक, महिमा की पुस्तक, उपसंहार।

यूहन्ना के सुसमाचार के उद्देश्य। मददगार रूप से, यूहन्ना हमें यूहन्ना 20:30 और 31 में बताता है कि उसके सुसमाचार का मुख्य उद्देश्य सुसमाचार प्रचार है, और जब हम इसे पढ़ते हैं तो इस बारे में कोई सवाल नहीं उठता। हालाँकि, महिमा की पुस्तक मुख्य रूप से सुसमाचार प्रचार के बारे में नहीं लगती है, सिवाय उन मुख्य तथ्यों को इंगित करने के जिन पर सुसमाचार प्रचार आधारित है।

मसीह की मृत्यु अध्याय 19 में है, और उसका पुनरुत्थान अध्याय 20 और 21 में है। लेकिन अध्याय 13 से 17 में यीशु के विदाई प्रवचन और अंतिम प्रार्थना मुख्य रूप से सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य से नहीं हैं, इसलिए मेरा दूसरा उद्देश्य है, और वह है परमेश्वर के लोगों का उत्थान। संभवतः क्षमाप्रार्थी का एक तीसरा उद्देश्य भी है, जिस पर हम तब विचार करेंगे जब हम वहाँ पहुँचेंगे।

चौथा, मैं कह रहा हूँ। ये कथन यूहन्ना के सुसमाचार में हैं जहाँ यीशु कहते हैं, मैं हूँ, और रिक्त स्थान भरें। मैं भेड़शाला का द्वार हूँ।

मैं जीवन की रोटी हूँ। मैं सच्ची दाखलता हूँ, इत्यादि। मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।

दिलचस्प बात यह है कि संकेतों की पुस्तक में अध्याय 6 से 11 तक सात मैं कह रहा हूँ, केवल जॉन के सुसमाचार में। नहीं, मैं कह रहा हूँ। मैंने बस गलत बोला।

संकेतों की पुस्तक में एक समूह है। महिमा की पुस्तक में दो और मैं कह रहा हूँ, हालाँकि। 14.6 सबसे महत्वपूर्ण है, और फिर अध्याय 15, मैं सच्ची दाखलता हूँ।

तो, संकेतों की पुस्तक में सात समूहों में से पाँच। महिमा की पुस्तक में दो दिखाई देते हैं। सात अलग-अलग मैं कह रहा हूँ, लेकिन सात अलग-अलग अर्थ नहीं।

तीन अलग-अलग अर्थ, और यूहन्ना फिर से सहायक रूप से सभी सात चिह्नों के अर्थ को सारांशित करता है। वह सात चिह्नों के तीन अर्थों को एक चिह्न में सारांशित करता है, जो 14.6 है। मैं मार्ग हूँ, मैं सत्य हूँ, और जीवन हूँ, यीशु ने कहा। और बस पूर्वावलोकन के लिए कि हम क्या खोजने जा रहे हैं, मैं मार्ग हूँ, जिसका अर्थ है कि वह उद्धारकर्ता है।

वह भेड़शाला में जाने का द्वार या दरवाज़ा है। वह रास्ता है, यह ग्रीक शब्द है रास्ता या सड़क, यूहन्ना 14.6 संदर्भ में, पिता के स्वर्गीय घर की ओर जाने वाला रास्ता, जिसमें कई कमरे हैं। मैं रास्ता हूँ, जिसका मतलब है कि मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता।

वह मानवजाति का अद्वितीय उद्धारकर्ता है। मैं सत्य हूँ। प्रस्तावना के पहले अध्याय में ही, जिसमें बहुत से विषयों का परिचय दिया गया है, यीशु को सृष्टि में ईश्वर के प्रकटकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

हालाँकि, मुख्य रूप से, यूहन्ना उसे उद्धार में परमेश्वर का प्रकटकर्ता दिखाता है, और जब वह कहता है, मैं सत्य हूँ, तो इसका मतलब है कि वह परमेश्वर का प्रकटकर्ता है। वह दुनिया का प्रकाश है, जैसा कि वह कहता है, और फिर दिखाता है, उस बिंदु तक सभी शास्त्रों में एक अद्वितीय चमत्कार करके, एक अंधे व्यक्ति को ठीक करना। मैं मार्ग हूँ, उद्धारकर्ता।

मैं सत्य हूँ, परमेश्वर का प्रकटकर्ता हूँ। मैं जीवन हूँ, जिसका अर्थ है कि वह जीवनदाता है। क्या मैं यूहन्ना 10 की बात कर रहा हूँ, जो अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन देता है? नहीं, यह महत्वपूर्ण है, बेशक, लेकिन जीवनदाता, इससे मेरा मतलब है कि वह अपने लोगों को अनंत जीवन प्रदान करता है।

वह उन सभी को अनंत जीवन प्रदान करता है जो उस पर विश्वास करते हैं। यह अधिकांश मैं हूँ कथनों और अधिकांश संकेतों का अर्थ है। इसलिए यहाँ यूहन्ना 14:6 में, यीशु सात मैं हूँ कथनों के तीन अर्थों का सारांश प्रस्तुत करता है।

यीशु मार्ग है, उद्धारकर्ता है, और वह सत्य है, परमेश्वर का प्रकटकर्ता है, जो यीशु के चरित्र, शब्दों और कार्यों में इस तरह से कभी प्रकट नहीं हुआ है, और वह अनन्त जीवन का दाता है। संकेत। यदि हम संकेतों को रेखांकित करते हैं, यदि हम उन्हें यूहन्ना के सुसमाचार के अध्यायों में रेखांकित करते हैं, तो हमें सात मिलते हैं, हमें सात संकेत मिलते हैं।

वैसे, जॉन चाहता है कि हम गिनती करें क्योंकि पहले और दूसरे संकेत के लिए, वह कहता है, यह पहला था, पानी को शराब में बदलना, और फिर रईस के बेटे का ठीक होना, वह कहता है, यह दूसरा है। वह गिनती नहीं करता, लेकिन यह मेरा निजी विचार नहीं है। यह जोहानिन अध्ययनों में प्रथागत है।

वह चाहता है कि हम गिनती करते रहें। अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम संकेतों की पुस्तक में सात संकेतों को पाएँगे, जहाँ से इसका नाम पड़ा है। सातवाँ संकेत अध्याय 11 में है।

और यह सात में से सबसे महान है। यह न केवल अध्याय नौ में एक अंधे व्यक्ति को ठीक करता है, बल्कि जैसा कि वह व्यक्ति खुद कहता है, किसी ने कभी किसी व्यक्ति को अंधे व्यक्ति को ठीक करते हुए नहीं सुना है। और आप नहीं जानते कि यह आदमी कहाँ से है।

वह भगवान की ओर से है, मूर्खों। यह हास्यास्पद है। एक अशिक्षित अंधा आदमी जो अब इजरायल के नेताओं, शिक्षित नेताओं को चुनौती दे रहा है और उन्हें बाइबिल धर्म की एबीसी सिखा रहा है।

खैर, यीशु ने आगे बढ़कर काम किया। और अंधे आदमी की आँखों को ठीक करने से ज़्यादा मुश्किल है मरे हुए आदमी को ज़िंदा करना। और यही वह अध्याय 11 में करता है।

और कोई चिन्ह नहीं। महिमा की पुस्तक में अध्याय 20 तक कोई चिन्ह नहीं है। जब यीशु को मृतकों में से जीवित किया जाता है।

क्या यह सबसे बड़ा संकेत है? कुछ लोग ऐसा सोचते हैं। मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ। अध्याय दो में यीशु की भविष्यवाणी के कारण, तीन दिन में इस मंदिर को नष्ट कर दो, मैं इसे फिर से खड़ा कर दूँगा।

एक चिन्ह के लिए अनुरोध में, यही उसका उत्तर था। पाठ में यह भी बताया गया है कि जॉन ने हमें अपनी संपादकीय टिप्पणियों में से एक दी थी। वह अपने शरीर के मंदिर का उल्लेख कर रहा था।

और उनके पुनरुत्थान के बाद, उनके शिष्यों ने उनके वचन और शास्त्रों पर विश्वास किया, आश्चर्यजनक रूप से, यीशु के शब्दों को पुराने नियम के बराबर रखा। और फिर, अध्याय 21 में, मछली का चमत्कारी रूप से पकड़ा जाना एक अच्छा संकेत होगा। लेकिन संकेतों की पुस्तक में सात संकेत समूहबद्ध हैं। सातवाँ, लाज़र का पुनरुत्थान, यीशु के पुनरुत्थान की ओर इशारा करता है, जो या तो संकेतों का सार है या उन सभी से बड़ा महान संकेत है, जिसकी ओर वे सभी

अंततः इशारा करते हैं। संकेत यीशु के चमत्कारों के लिए यूहन्ना के शब्द हैं, जिन्हें अध्याय 20 में चुनिंदा रूप से दर्ज किया गया है।

उद्देश्य कथन में, यूहन्ना कहता है कि यीशु ने अपने शिष्यों की उपस्थिति में कई अन्य चिह्न दिखाए, जो इस पुस्तक में दर्ज नहीं हैं। लेकिन ये इसलिए लिखे गए हैं ताकि तुम मसीह पर, मसीहा और परमेश्वर के पुत्र के रूप में विश्वास कर सको, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। यूहन्ना चयनात्मक था; यीशु ने कई अन्य चिह्न दिखाए; उसने सात, या शायद आठ, या शायद नौ, निश्चित रूप से आठ, कम से कम और शायद नौ चुने, यदि यीशु के पुनरुत्थान को मसीह की पहचान प्रदर्शित करने और उसमें विश्वास, उद्धार करने वाले विश्वास को जगाने के लिए एक संकेत के रूप में गिना जाना है।

लेकिन यीशु के संकेतों के लिए शब्द संकेत नहीं हैं। यह काम करता है, इसलिए। वह रखता है, वह उन कार्यों के बारे में बोलता है जो पिता ने मुझे करने के लिए दिए थे।

यूहन्ना 17. हे पिता, अपने पुत्र की महिमा कर, कि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा करे। जो काम तूने मुझे करने को दिया था, उसे मैं ने पूरा किया।

आश्चर्यजनक रूप से, अध्याय 17 में महान महायाजकीय प्रार्थना। हालाँकि यह यीशु के क्रूस पर जाने से पहले की बात है, लेकिन उसके मन की नज़र में, वह पहले ही क्रूस पर जा चुका था। और जैसा कि अध्याय 17 की आयत 24 से संकेत मिलता है, उसके मन की नज़र में, वह क्रूस पर जाने के लिए इतना दृढ़ है कि वह लगभग उठकर पिता के पास वापस चला जाता है।

17:24. हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है वे भी वहीं रहें जहाँ मैं हूँ। मेरी महिमा को देखें, वह महिमा जो तूने मुझे संसार की रचना से पहले दी थी क्योंकि तूने मुझसे प्रेम किया।

टाइम की बातें। वैसे, टाइम कह रहा है कि जॉन में इनमें से कुछ अंतरों के बारे में हमारा दावा यह नहीं है कि वे बिल्कुल अलग हैं। इनमें से कुछ उदाहरण के लिए, दूसरे सुसमाचारों में भी दिखाई देते हैं।

लेकिन चौथे सुसमाचार में उनकी व्यापकता और उनका महत्व ही उन्हें विशिष्ट समय कथन बनाता है, या जब यीशु ऐसी बातें कहते हैं जैसे कि मेरा समय अभी नहीं आया है, या यहूदी उस पर हाथ रखना चाहते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था, जो पिता की दैवीय सुरक्षा को दर्शाता है। फिर, अध्याय 12 के अंत में, अध्याय 13 की शुरुआत में, यह कहा गया है कि उसका समय आ गया है। यह उसके लिए अपना काम या उसके काम करने का नियत समय है।

उसके कार्य उसके मुँह से निकले शब्द और उसके द्वारा किए गए कार्य हैं। उसके कार्य खास तौर पर उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में हैं। समय की बातें उससे भी बड़ी हैं क्योंकि वे वास्तव में अंत तक जाती हैं। जैसा कि अध्याय पाँच में है, समय आ रहा है, घड़ी आ रही है, और घड़ी और समय कुछ हद तक एक दूसरे के स्थान पर हैं।

वह समय आ रहा है जब मृतक मनुष्य के पुत्र की आवाज़ सुनेंगे, और जो कब्रों में हैं वे बाहर आएँगे। यूहन्ना पाँच, लगभग 28 और 29। यह एक भविष्यवाणी है, एक भविष्यवाणी, बेशक, यीशु, प्रभु यीशु की आवाज़ पर मृतकों के पुनरुत्थान के बारे में।

यह यूहन्ना 5:28 और 29 है। समय की बातें यूहन्ना के सुसमाचार को ऐतिहासिक क्रम देती हैं। वे इस तरह से बहुत महत्वपूर्ण हैं, साथ ही पर्व भी।

वे समय को चिह्नित करते हैं। वे बाइबिल की कहानी की ओर इशारा करते हैं। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि जॉन इस अर्थ में अस्तित्ववादी है कि हम किसी साधक से कहते हैं, जॉन का सुसमाचार पढ़ो।

ऐसा लगता है जैसे यीशु सीधे आपसे बात कर रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह सीधे आपसे बात कर रहे हैं। और इसलिए बुल्टमैन इसकी इस विशेषता पर ज़ोर दे सकते हैं।

यीशु और पापी, पाठक के बीच वह अस्तित्वगत, वह सीधा संवाद है, जिसने कई लोगों को मसीह की ओर अग्रसर किया है क्योंकि वे अध्याय सात में मंदिर के पुलिस से सहमत हैं, जो यीशु को गिरफ्तार करने गए थे और खाली हाथ वापस आए थे। और आपके साथ क्या मामला है? फरीसी जानना चाहते हैं। आपकी समस्या क्या है? वह कहाँ है? और उन्होंने कहा, कभी किसी आदमी ने इस तरह से बात नहीं की जिस तरह से इस आदमी ने बात की है।

मैं फरीसियों और शास्त्रियों पर हंसता हूँ। एक अंधा आदमी उनसे बेहतर देख सकता है, एक पूर्व अंधा आदमी। मंदिर के पुलिस वाले, जो बिल्कुल भी विद्वान नहीं हैं, वे नेताओं से बेहतर सुन सकते हैं, लेकिन नेता मसीह के दावों के प्रति अंधे और बहरे हैं।

यीशु के प्रति प्रतिक्रियाएँ वही हैं जिनसे हम निपटना चाहते हैं। यीशु के प्रति दो बड़ी प्रतिक्रियाएँ, और अधिकांश अन्य विषयों की तरह, सभी नहीं, बल्कि कई, कई विषयों को प्रस्तावना में पेश किया गया है। वह अपने लोगों के पास आया; उसके अपने लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया।

जितने लोगों ने उसे स्वीकार किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया, यहाँ तक कि उन लोगों को भी जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया - प्रस्तावना में पहले से ही दो उत्तर दिए गए हैं। पहला नकारात्मक है, और दूसरा सकारात्मक है।

क्या यह महत्वपूर्ण है? ओह हाँ, यह महत्वपूर्ण है। यह यूहन्ना के सुसमाचार की रूपरेखा प्रस्तुत करता है क्योंकि प्रस्तावना से लेकर 12 के अंत तक, संकेतों की पुस्तक काफी हद तक असफलता से भरी हुई है। हालाँकि यीशु ने उनकी उपस्थिति में इतने सारे संकेत किए थे, फिर भी उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया, 12:37।

यह भयानक है, बिल्कुल भयानक। यह सही आयत है, 12:37। और हाँ, यह सारांश है, हाँ, कुछ लोगों ने विश्वास किया, लेकिन सामान्य तौर पर, यीशु के शब्दों और कार्यों को यहूदियों ने अविश्वास के साथ देखा।

यूहन्ना 20:30, और 31, जैसा कि थॉमस में व्यक्त किया गया है, जिसने देखा तो विश्वास किया, हमें नहीं लगता कि उसे वास्तव में स्पर्श करने की आवश्यकता थी। यीशु ने स्पर्श कहा। उसने विश्वास किया कि यीशु ने उसे विश्वास करने के लिए धन्य घोषित किया और उन लोगों को और अधिक धन्य घोषित किया जो बिना देखे विश्वास करते हैं। फिर, उद्देश्य कथन फिर से कहता है कि संकेत लिखे गए हैं ताकि लोग विश्वास कर सकें कि यीशु मसीहा, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करके, वे उसके नाम में जीवन पा सकते हैं।

अतः, प्रस्तावना में पहले से ही उल्लिखित यीशु के प्रति प्रतिक्रियाओं ने वास्तव में परमेश्वर के पुत्र के प्रति प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में पुस्तक को रेखांकित किया। 12:37, चिह्नों की पुस्तक में यीशु के संदेशों और चमत्कारों के प्रति बहुमत की प्रतिक्रिया को सारांशित करता है, और वह है अस्वीकार। 20, 30, और 31, अध्याय 13 में पद 1 में 11 शिष्यों की विश्वासपूर्ण प्रतिक्रिया को सारांशित करते हैं। यीशु शिष्यों को ऊपरी कमरे में ले जाता है और संसार के लिए द्वार बंद कर देता है।

श्रोता संसार है, खास तौर पर यहूदी संसार। महिमा की पुस्तक का श्रोता शिष्य हैं - यीशु के साक्षी।

यीशु के गवाहों का परिचय प्रस्तावना में दिया गया है, खास तौर पर जॉन बैपटिस्ट के साथ। ठीक इसी तरह से उनकी पहचान की गई है। वह मसीह नहीं हैं।

वह मसीह की ओर इशारा करता है। वह एक गवाह है। उसे परमेश्वर की ओर से प्रकाश की गवाही देने के लिए भेजा गया था।

वह प्रकाश नहीं है, लेकिन उसे प्रकाश की गवाही देने के लिए भेजा गया है ताकि सभी उसके माध्यम से प्रकाश में विश्वास कर सकें। यीशु के गवाह जॉन के सुसमाचार में हैं, सुसमाचार के महान रोमन कैथोलिक विद्वान, रेमंड ब्राउन, और उनकी एंकर बाइबल कमेंट्री ने मुझे यह सिखाया। जॉन वास्तविक समय, वास्तविक पाठ को कम करके आंकते हैं जहाँ यीशु अपने जीवन के अंत में पिलातुस और हेरोदेस के सामने परीक्षण में खड़े होते हैं।

वह इसे शामिल करता है, कभी-कभी व्यंग्य के साथ जो लगभग हास्यास्पद है, जिसे हम बाद में देखेंगे। लेकिन वह इसे शामिल करता है, लेकिन इसे छोटा करता है, छोटा करता है। इसके बजाय, वह दिखाता है कि यीशु अपने पूरे जीवन में परीक्षण में था।

और यहूदी नेता उसे अस्वीकार करते हैं। वे उसकी निंदा करते हैं। यही उनका फैसला है।

लेकिन भगवान एक और फैसला सुनाते हैं, और वह ऐसा शायद सात के ज़रिए करते हैं। क्या यह संख्या बार-बार आती है? हाँ। शायद सात, लेकिन मुझे यह दूसरी श्रेणी से समझ में आता है, इसलिए शायद यह भ्रामक है।

लेकिन बहुत से गवाह, कम से कम सात। और यह यूहन्ना के दो मुख्य अंशों में पाया जाता है, मसीह के गवाह। सबसे बड़ा अध्याय पाँच में है।

पुराना नियम, पिता, यीशु के चमत्कार, और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला सभी परमेश्वर के पुत्र की गवाही देते हैं। सबूतों की कमी नहीं है। यूहन्ना यही दिखा रहा है।

यीशु को जीवन भर परीक्षण का सामना करना पड़ा। हाँ, अंत में परीक्षण होते हैं, और जॉन को भी यही झेलना पड़ा। लेकिन वह पूरे समय परीक्षण में रहा।

और पिता स्वर्ग से भी गवाही देता है। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर, अध्याय 12। हे पिता, परमेश्वर स्वर्ग से बोलता है।

मैंने इसे महिमामंडित किया है, और मैं इसे फिर से महिमामंडित करूंगा। और सभी लोग कहते हैं, हल्लेलुया, हमने आवाज़ सुनी है... नहीं, वे नहीं सुनते। वे कहते हैं कि मुझे लगता है कि यह गरज रहा था, या मुझे लगता है कि एक स्वर्गदूत ने बात की थी।

दूसरे शब्दों में कहें तो जॉन व्यंग्यात्मक और व्यंग्यात्मक है। अगर अच्छा भगवान स्वर्ग से बोलता, तो ये लोग उसे समझ नहीं पाते। जॉन ने पाप की प्राथमिक प्रस्तुति अविश्वास के रूप में की है, और यह यही है।

परमेश्वर स्वर्ग से बोलता है, अपने बेटे में अपने नाम की महिमा करता है, और सुनने वाले इसे सुन नहीं पाते। वे इसे समझ नहीं पाते। वे समकालिक भाषा का प्रयोग करते हैं।

उनके पास सुनने के लिए कान नहीं हैं। यशायाह 6 को दर्शाते हुए। अध्याय आठ में भी यीशु के बारे में महत्वपूर्ण गवाहियाँ हैं और परमेश्वर के पुत्र की तस्वीरें हैं।

यूहन्ना ने यीशु के कई चित्र बनाए हैं। वह परमेश्वर को प्रकट करने वाला है। वह जीवन देने वाला है।

वह मसीहा है, मसीह है। वह मनुष्य का पुत्र है। वह परमेश्वर का पुत्र है और भी बहुत कुछ है।

यूहन्ना यीशु के उद्धार कार्य की भी तस्वीरें खींचता है। क्या यह प्रायश्चित का सिद्धांत है? यह उससे भी बड़ा है। यह उसका उद्धार कार्य है।

हाँ, पहला उल्लेख अध्याय एक में है। वह परमेश्वर का मेम्रा है, जैसा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा, जो संसार के पापों को दूर करता है, एक बलिदानी पुरोहिती विषय जो उच्च पुरोहिती प्रार्थना में विकसित हुआ है। मैं खुद को पवित्र करता हूँ ताकि वे, शिष्य और अन्य विश्वासी, पवित्र हो सकें, लेकिन उनके उद्धार कार्य में उन्हें गेहूँ के दाने के रूप में शामिल किया गया है जो जमीन में गिरता है और मर जाता है और एक बड़ी फसल पैदा करता है, और वह विजेता है जो अपने लोगों की ओर से शैतान और दुनिया पर विजय प्राप्त करता है।

जैसा कि हमने कहा, वह जीवनदाता है। यह उसके उद्धार कार्य का हिस्सा है, उसका पुनरुत्थान बचाता है। वास्तव में, अध्याय 10 कहता है, मैंने अपना जीवन दिया है, मैं इसे फिर से लेता हूँ।

पिता ने मुझे अपना जीवन देने और उसे फिर से लेने की अनुमति दी है। पवित्र आत्मा चौथे सुसमाचार में आता है। मुख्य रूप से, उसे पितेकुस्त के बाद के रूप में देखा जाता है, लेकिन पूर्ण रूप से नहीं।

एकता का सिद्धांत है, और मैं इसे इस तरह कहता हूँ। खैर, यहाँ हमारे पास पिता और पुत्र को परमेश्वर के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हमारे पास यहाँ पवित्र आत्मा को परमेश्वर के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है, लेकिन ईसाई धर्मशास्त्र कहता है, जॉन के पूरे सुसमाचार और नए नियम के बाकी हिस्सों से जो हम जानते हैं, उसके आधार पर, कि आत्मा भी परमेश्वर है।

इसलिए, हमारे पास त्रिएकता का सिद्धांत है, त्रिएकता को ग्रहण किया गया या प्रक्षेपित किया गया, कुछ ऐसा ही, क्योंकि मुख्य रूप से जॉन विदाई प्रवचनों में, 14, 15, 16, आत्मा के बारे में सत्य की आत्मा और जीवन की आत्मा के रूप में बात करते हैं। उन दोनों को पवित्र आत्मा की भावी सेवकाई के रूप में देखा जाता है, और शायद आत्मा के बारे में कहने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह यीशु का स्थान लेता है। वह यीशु का दूसरा रूप है, और यीशु की कई सेवकाईयाँ, पाप के बारे में दुनिया को दोषी ठहराना, पिता को प्रकट करना, पिता को महिमा देना, जीवन देना, सत्य की आत्मा द्वारा ली जाती हैं, और वह जीवन की आत्मा भी है।

ये टैग पवित्र आत्मा पर सिनक्लेयर फर्ग्यूसन की अद्भुत पुस्तक से लिए गए हैं। इस पुस्तक का नाम द होली स्पिरिट है, कॉन्डोर्स ऑफ क्रिश्चियन थियोलॉजी इन वर्सिटी प्रेस। जॉन के धर्मशास्त्र में चर्च भी शामिल है।

वह चर्च शब्द का प्रयोग नहीं करता। केवल मैथ्यू ही अपने सुसमाचार के अध्याय 16 और 18 में सुसमाचार के उस शब्द का प्रयोग करता है, लेकिन जॉन के पास चर्च शब्द के बिना चर्च का विचार है। हमें शब्द अवधारणा भ्रांति के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है।

यह दो तरह से काम करता है। एक तरीका यह है कि आप कहें कि किसी विचार को व्यक्त करने के लिए आपके पास एक विशेष शब्द या शब्द होने चाहिए। इस मामले में, आपके पास चर्च या चर्चस शब्द होना चाहिए, और यह गलत है, बिल्कुल गलत।

यूहन्ना कभी चर्च के बारे में नहीं कहता, लेकिन चर्च भेड़ों से बना है। यह उन लोगों से बना है जो दाखलता में रहते हैं। यह परमेश्वर के लोग हैं जिन्हें पिता ने पुत्र को दिया, और बहुत कुछ, जिसकी हम जाँच करेंगे, एक ऐसा विषय जिसकी इतनी सामान्य रूप से जाँच नहीं की जाती है लेकिन जो महत्वपूर्ण है।

उद्धार हर जगह है, और इसलिए हमारे पास इसके लिए समर्पित छह विषय हैं। परमेश्वर का प्रेम, स्रोत, आधार, उद्धार का स्रोत, अगर आप चाहें तो चुनाव, परमेश्वर द्वारा उद्धार के लिए लोगों को चुनना। यहाँ फिर से, हम अवधारणा भ्रांति शब्द से बचते हैं।

यूहन्ना ने कभी भी चुनाव, पूर्वनियति या पूर्वनियति जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया, लेकिन तीन चित्रों के साथ, वह चुनाव की अवधारणा को प्रस्तुत करता है। पिता लोगों को पुत्र को देता है। अध्याय 15 में पुत्र चुनाव का लेखक है।

मुझे नहीं लगता कि मैं तीसरे तक पहुँच पाया हूँ, मैंने इसे छोड़ दिया है। चुनाव की तीसरी तस्वीर में, पिता लोगों को पुत्र को देता है। जॉन 17 में चार बार, यह धारणा आती है।

यह महायाजकीय प्रार्थना को निर्धारित करता है। यह अविश्वसनीय है। यीशु केवल यूहन्ना 15, 16 और 19 में चुनाव के लेखक हैं।

तीसरी तस्वीर परमेश्वर के लोगों की पूर्व या पूर्ववर्ती पहचान है। यूहन्ना 10 में, यीशु कहते हैं, मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगी। कुछ आयतों पहले, शायद आयत 26 के आस-पास, वे कहते हैं, तुम किस अधिकार से ये चिन्ह दिखाते हो? एक और चिन्ह दिखाओ, यीशु कहते हैं।

मैंने बहुत कुछ किया है जो तुम विश्वास नहीं करते। तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं, और वे मेरा अनुसरण करती हैं, और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ।

अब, एक मिनट रुकिए। क्या इसका मतलब यह है कि तुम मेरी भेड़ नहीं हो क्योंकि तुम विश्वास नहीं करते? नहीं। क्या यह सच नहीं है? हाँ।

वास्तव में, यह जॉन के सुसमाचार में अधिक आम है, शब्द नहीं, बल्कि अवधारणा। अविश्वास व्यक्ति को अनन्त जीवन से अयोग्य बनाता है। इसलिए, निश्चित रूप से, तुम मेरी भेड़ नहीं हो क्योंकि तुम विश्वास नहीं करते कि यह सच है।

यीशु यहाँ ऐसा नहीं कह रहे हैं। वे कहते हैं कि तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ नहीं हो। भेड़ों, और मैं उन्हें बकरियाँ कहूँगा, की एक पूर्व पहचान है, ओह, जो केवल परमेश्वर को ही पता है।

शिष्य नहीं जानते कि कौन चुना गया है और कौन नहीं चुना गया है, लेकिन परमेश्वर जानता है। और यह यूहन्ना के सुसमाचार में चुनाव की तीसरी तस्वीर है। मेरी भेड़ें इस तरह से नामित की गई हैं।

परमेश्वर के लोगों के विश्वास करने से पहले उनके पास एक पूर्ववृत्त या पूर्व पहचान होती है। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। इसका मतलब है कि वे यीशु में विश्वास करते हैं, और वे मेरा अनुसरण करते हैं।

इसका मतलब है कि वे शिष्यत्व के जीवन में प्रवेश करते हैं। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगे। चुनाव चौथे सुसमाचार का एक महत्वपूर्ण विषय है, जैसा कि डीए कार्सन ने अपनी बड़ी पुस्तक, दिव्य संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी, बाइबिल परिप्रेक्ष्य और तनाव में दिखाया है।

अपनी अधिक लोकप्रिय पुस्तक में, वह दुख और बुराई पर बाइबिल के कथनों को भी दिखाता है, हे प्रभु, कितना लंबा। यह सही उपशीर्षक नहीं है, लेकिन यह करीब है। चौथे सुसमाचार में अनन्त जीवन कई बार आता है।

जैसा कि कई विद्वानों ने कहा है, यदि परमेश्वर का राज्य पहले तीन सुसमाचारों में गूँजने वाला शब्द है, तो जीवन, अनन्त जीवन, चौथे सुसमाचार में शब्द है। जैसा कि हम जॉन की शब्दावली को देखते हुए देखेंगे, परमेश्वर का राज्य अनुपस्थित नहीं है, लेकिन यह बहुत कम है। अनन्त जीवन हर जगह है।

मेरा कहना है कि यह यूहन्ना के सुसमाचार में 34 या 35 बार आता है, अन्य सुसमाचारों में कुल 20 से भी कम बार, हमेशा यूहन्ना के अनन्त जीवन में। यह ईश्वर का उपहार है, दिव्य संप्रभुता। यह वह है जो यीशु में विश्वास करने से प्राप्त होता है, मानवीय जिम्मेदारी।

यह पहले से ही है, और यह अभी तक नहीं है। यह पहले से ही है, और यह अनन्त जीवन है, यूहन्ना 17:3, कि वे तुम्हें, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को, और यीशु मसीह को, जिसे तुमने भेजा है, जानें। पिता और पुत्र को अभी जानना अनन्त जीवन है।

अध्याय 5, जो कोई मेरी आवाज़ सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, वह मृत्यु से जीवन में चला गया है। अब, यूहन्ना 5, 28, 29 में कुछ आयतों के बाद, यह अनन्त जीवन का अभी तक नहीं आया आयाम है। मनुष्य के पुत्र की आवाज़, जो लोग अपनी कब्रों में हैं, वे बाहर आएँगे, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने अच्छा किया है, और वे अनन्त जीवन के पुनरुत्थान के लिए बाहर आएँगे।

उद्धार भी आकर्षित करने की बात करता है, कम से कम दो बार मैं सोच सकता हूँ। जॉन कहते हैं कि पिता लोगों को पुत्र की ओर आकर्षित करता है। इसका मतलब है कि वह प्यार से पॉल की भाषा का उपयोग करता है और उन्हें समय और स्थान में बुलाता है ताकि वे परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करें।

आकर्षित करना। अध्याय 12 में यीशु कहते हैं कि वह सभी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस संदर्भ में, न केवल यहूदियों ने बल्कि यूनानियों ने भी उनसे बात करने के लिए कहा था।

ऐसा लगता है कि वह उन्हें टाल रहा है, लेकिन वह उन्हें इस महान कथन में शामिल करता है। मृतकों के पुनरुत्थान के बारे में चौथे सुसमाचार में सिखाया गया है, जहाँ यीशु कई बार कहते हैं, मैं उन लोगों को जीवित करूँगा जिन्हें पिता ने मुझे दिया है, जो लोग मेरे पास आते हैं, यानी मुझ पर विश्वास करते हैं, जिन लोगों को पिता मेरे पास लाता है, मैं उन्हें अंतिम दिन जीवित करूँगा। उदाहरण के लिए, वह इसे अध्याय छह में दोहराता है।

इसलिए, उद्धार परमेश्वर के लोगों के लिए, यीशु में विश्वास करने वालों के लिए, अनन्त जीवन के लिए पुनरुत्थान में परिणत होता है। उद्धार में परमेश्वर का संरक्षण का कार्य भी शामिल है, अपने लोगों को सुरक्षित रखना। यह पिता की इच्छा है, अध्याय छह, कि मैं उनमें से किसी को न खोऊँ जो उसने मुझे दिया है, बल्कि उन्हें अंतिम दिन में जीवित कर दूँ।

जो कोई मुझे पर विश्वास करता है, जो मेरे पास आता है, मैं उसे बाहर नहीं निकालूँगा। यीशु भेड़ों की रक्षा करता है। वह अपने लोगों की रक्षा करता है।

वास्तव में, अध्याय 10 में दिखाया गया है कि यह पिता और पुत्र का सामंजस्यपूर्ण कार्य है। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, यूहन्ना 10:26, और वे कभी नष्ट नहीं होंगे। पिता जिसने उन्हें मुझे दिया है, वह महान है।

मुझे इस पर आना होगा, माफ़ करें। जब आप किसी पाठ को गलत तरीके से लिखना शुरू करते हैं, तो आप पाठ पर जाते हैं - सिद्धांत संख्या चार।

पहले तीन सिद्धांत क्या हैं? मुझे नहीं पता। मेरी भेड़ें मेरी बात सुनती हैं, मैं उन्हें जानता हूँ, वे मेरा अनुसरण करती हैं, मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, वे कभी नष्ट नहीं होंगी। और कोई भी उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता।

यह हिंसा की तस्वीर है, लोगों को यीशु से दूर करना, या शायद भेड़ों को चरवाहे की मजबूत बाहों से दूर करना। विचार यह है कि यदि वह सबसे मजबूत शब्द, छीनना का उपयोग करता है, तो इसमें कम शब्द शामिल हैं। इसलिए, वह विरोध की उच्चतम डिग्री के लिए जाता है।

इतना ही नहीं, यीशु न केवल अपनी भेड़ों की देखभाल करता है, बल्कि मेरा पिता जिसने उन्हें मुझे दिया है, वह सब से बड़ा है। पुत्र के संसार में आने पर पिता के प्रति पुत्र की आर्थिक अधीनता होती है। कोई सत्तामूलक अधीनता नहीं जिससे पुत्र ईश्वर से कमतर हो, बल्कि वह पिता से कार्यात्मक रूप से कमतर है क्योंकि ईश्वर, पुत्र, एक मनुष्य बन जाता है और ईश्वर के लोगों के उद्धार के कार्य के लिए स्वेच्छा से पिता के अधीन हो जाता है।

मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझे दिया है, सब से बड़ा है। कोई भी उन्हें पिता के हाथ से छीनने में सक्षम नहीं है। मैं और पिता संदर्भ में एक हैं, यह दार्शनिक ऑन्टोलॉजी के बारे में एक बयान नहीं है।

हम अपने अस्तित्व में एक हैं, लेकिन यह पिता और पुत्र की दिव्यता के बारे में एक कथन है क्योंकि मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट नहीं होंगे। मैं उन्हें सुरक्षित रखता हूँ, पिता उन्हें सुरक्षित रखता है, मैं और पिता भेड़ों को सुरक्षित रखने के हमारे दिव्य कार्य में एक हैं। यीशु वह कार्य करता है जो केवल परमेश्वर ही करता है।

संरक्षण उद्धार का एक पहलू है, जिसे पारंपरिक रूप से संतों की दृढ़ता कहा जाता है। यह चौथे सुसमाचार में पिता और पुत्र द्वारा किया जाता है। मुझे तुरंत ऐसा कोई मामला याद नहीं आता जहाँ यह पौलुस में आत्मा द्वारा किया गया हो; मैं चौथे सुसमाचार में मामलों के बारे में सोच सकता हूँ।

मैं किसी एक के बारे में नहीं सोच सकता, लेकिन अगर मैं व्यवस्थित धर्मशास्त्र की ओर बढ़ूँ, तो मैं कहूँगा कि चूंकि ईश्वर एक त्रिएक है, वह एक में तीन है, और उसके सभी कार्य अविभाज्य हैं।

हम व्यक्तियों को भ्रमित नहीं करते हैं, लेकिन ईश्वर के कार्य एक हैं। यह पिता, पुत्र और आत्मा हैं जो हमें बचाते हैं, हालाँकि मैं पहले से ही चौथे सुसमाचार में एक पाठ नहीं दिखा सकता और अभी तक नहीं।

नए नियम के बाकी हिस्सों के साथ मिलकर, यूहन्ना दिखाता है कि अंतिम बातों की मुख्य विशेषताएँ यीशु में पूरी हो चुकी हैं और उन्हें अभी भी उसी समय पूरा होना है। हम इसे समय की बातों से देखते हैं, और उसका समय आ गया था, 12 का अंत। यीशु, यह जानते हुए कि इस दुनिया को छोड़ने और पिता के पास लौटने का समय आ गया है, अंत तक अपने लोगों से प्यार करता है, यूहन्ना 13.1। यह पहले से ही है, और फिर भी मृतकों के पुनरुत्थान का समय, यूहन्ना 5.28-29, अभी तक नहीं आया है।

यह अभी भी भविष्य है। यूहन्ना में अनन्त जीवन मुख्यतः पहले से ही है। यह मुख्यतः एक तथ्य है।

यह विश्वासियों का वर्तमान अधिकार है। लेकिन यह भविष्य भी है। मेरा मतलब है, हाँ, यह भविष्य भी है।

आह, यूहन्ना 12. तो, मुख्य रूप से, अनन्त जीवन अब चौथे सुसमाचार में है। यहाँ एक जगह है। शायद एक से ज़्यादा जगहें हैं, लेकिन यहाँ एक जगह है जो दिमाग में आती है।

यूहन्ना 12:25. जो कोई अपने प्राण को प्रिय समझता है, वह उसे खो देता है। जो कोई इस संसार में अपने प्राण को अप्रिय समझता है, वह उसे अनन्त जीवन के लिए सुरक्षित रखेगा, जो इस संसार के जीवन के विपरीत है। इसका अर्थ है परलोक में जीवन।

जो कोई भी अपने जीवन से घृणा करता है, तथाकथित पूर्वी तुलना, ईश्वर के प्रति प्रेम की तुलना में, किसी भी अन्य चीज़ के प्रति हमारा प्रेम, घृणा है। इसका मतलब सचमुच अपने जीवन से घृणा करना नहीं है। जो कोई भी इस दुनिया में अपने जीवन से घृणा करता है, वह इसे अनंत जीवन के लिए रखेगा।

यूहन्ना पर की गई टिप्पणियाँ दिखाती हैं कि यह अनंत जीवन का भविष्यसूचक संदर्भ है। और ऐसा ही अन्य विषयों के साथ भी है। वे पहले से ही हैं, और वे अभी तक नहीं हैं।

पहले से ही, मृतकों का पुनरुत्थान है, यूहन्ना 5, आध्यात्मिक पुनरुत्थान। जो कोई भी मेरा वचन सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, वह इस प्रकार है कि यीशु पिता का प्रकटकर्ता है, मृत्यु से जीवन में चला गया है। वह आध्यात्मिक रूप से जी उठा है।

लेकिन यूहन्ना 5.28.29, भविष्य में केवल मनुष्य के पुत्र की आवाज़ पर ही मृतक अपनी कब्रों से बाहर आएँगे। यह हमारे पहले व्याख्यान के लिए पर्याप्त है। हमने यूहन्ना के धर्मशास्त्र का अवलोकन कर लिया है।

हम अपने अगले व्याख्यान में उनकी शैली पर चर्चा करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर दिया गया उनका व्याख्यान है। यह सत्र 1 है, जोहानिन धर्मशास्त्र का अवलोकन।